बोकारो-झारखण्ड। नवनिर्मित राजयोग भवन एवं पीस हॉल का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल द्रौपदी मुरमू। साथ हैं ब्र.कु. शीलू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. रानी,बिहार, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. मृत्युंजय,माउण्ट आबू, डी.सी. महिमापत राय, वाय.एस. रमेश, ब्र.कु. शैलेष सिंह तथा अन्य।

जो पाया वो कहाँ से आया..?

उंगली उठाना कितना आसान है, मगर सच की रोशनी में सारे इल्ज़ाम गायब हो जाते हैं।

यह जुमले देखिए...
हमें वो दु:खी कर गया।
पता नहीं दु:ख को हमारे घर का रास्ता किसने दिखाया।
तुमने मेरा दिल तोड़ दिया।
तुम गलत हो।

इन तमाम जुमलों में किसी और से मिले दु:ख या परेशानी का ज़िक्र है। कोई और ज़िम्मेदार है दु:ख के लिए, यही कहा गया है। दूसरों पर उंगली उठाने से पहले क्या यह सोचने की कोशिश हम करते हैं कि दु:ख पाने में हमारा कितना हाथ है। चहक को चहक ढूंढ़ती है और आंसू आंसू को तलाश लेते हैं। जब हम किसी से धोखा खाते हैं, तो उसमें हमारे अंधे विश्वास का हाथ होता है। किसी और की तरफ इशारा करके हम पीड़ित बनने में ज़्यादा इत्मिनान महसूस करते हैं। अगर उसी समय सच को मानकर, बिना कोई शोर मचाए आगे बढ़ने की ठानें, तो मिले धोखे का कष्ट तो कम होगा ही, अपनी भूलों का अहसास भी रहेगा।

यह मनोविज्ञान का सामान्य सा सूत्र है कि हम हमेशा खुद को पीड़ित और दु:खी बनाकर पेश करते हैं ताकि सहानुभूति मिले या हमारी भूल ढ़क जाए या कम से कम दूसरों की तवज्जो तो मिले ही। हमेशा यह सुनना अच्छा लगता है - आप तो भले हैं... लेकिन।

भला करें या नहीं, लेकिन एक बार अपने किए पर भी नज़र डालने की ज़रूरत है। पीड़त बने रहने से कुछ देर की सहानुभूति तो मिल जाती है, लेकिन घटना की सच्ची समझ नहीं मिल पाती। कोई सीख, कोई दिशा-निर्देश नहीं मिल पाता ताकि इंसान के तौर पर हम कुछ बढ़ सकें, विकास करें। यह तभी हो सकता है, जब पीड़ित का खोल उतारकर देखा जाए कि दरअसल, जो हुआ, वो हुआ कैसे। अंत में ज़रूर आप ठगे गए, लेकिन क्या सदा से ऐसा ही था? कहीं शुरुआत में ही तो अंत का स्वरूप नहीं छुपा हुआ था?

सुख या खुशी हम चुनते हैं। कोई इंसान, कोई वस्तु, कोई प्रक्रिया इतनी ताकतवर नहीं कि हमारी मर्ज़ी के बगैर हमारे मन पर कब्जा कर सके। प्रताड़नाओं के शिविर में भी रहकर लोग मन के मौसम को बासंती बनाए रखते हैं। खुशियों का बाँह पसारकर इंतज़ार करने के बजाय आतुर मन से उन्हें खोजने और पाने की कोशिश करते रहें, तो किसी और को कभी इल्ज़ाम नहीं देना होगा। जो खोजा, जो पाया, उसके लिए सदा से हम ज़िम्मेदार थे और रहेंगे।

- रचना समंदर

सोनीपत-हरियाणा। बाल सुधार गृह में मानव अधिकार संरक्षण संघ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम में से.-15 की ब्र.कु. प्रमोद बहन को प्रशस्ति पत्र भेंट करसम्मानित करते हुए पी.एम.जे.जे.बी. डॉ सुखदा प्रीतम, संघ के अध्यक्ष जयवीर गहलावत, जेल अधीक्षक जय कृष्ण छिल्लर व अन्य।

भीलवाड़ा-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित 'मीडिया के समक्ष मूल्य व चुनौतियाँ' विषयक मीडिया संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए विधायक विट्ठल अवस्थी, ब्र.कु. इंद्रा, मीडिया प्रभाग के मुख्य पदाधिकारी ब्र.कु. सुशांत, ब्र.कु. शांतनु, यू.आई.टी. के पूर्व चेयरमैन लक्ष्मी नारायण डाड, राजस्थान पत्रिका के डिप्युटी न्यूज़ एडिटर श्री राम शर्मा, ई.टी.वी. के प्रमोद तिवारी, पूर्व पी.आर.ओ. श्याम सुंदर जोशी, दैनिक भास्कर के एडिटर सुरेन्द्र चौधरी तथा अन्य गणमान्य जन।

आगरा-ईदगाह। धर्म योग फाउण्डर श्री योग भूषण जी महाराज के सेवाकेन्द्र में आने पर उनके साथ ईश्वरीय ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. अश्विनी, ब्र.कु. अमर तथा अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। कवि गोष्ठी में पूर्व डाकू एवं राजयोगी ब्र.कु. पंचम सिंह का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए श्याम धारा के अध्यक्ष कवि श्याम चिन्तन, कवि भोजराज सिंह, कवि सर उजाला, कवि चाँद हुसैन, कवि देवी सिंह निडर, कवि सुरेश चन्द्र, कवि वासुदेव उपाध्याय तथा अन्य जानेमाने कवियों के साथ ब्र.कु. शान्ता।

झालावाड़-राज.। मुख्यमंत्री के गृहक्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए ब्र.कु. मीना का सम्मान करते हुए जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र सोनी।

सम्बलपुर-ओडिशा। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा शहर में 'सखी शक्ति महिला मिनी मैराथन-2017' कार्यक्रमि का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में विधायिका डॉ. राशेस्वरी पाणीग्राही, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. डॉ. सविता तथा अन्य।